

२१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित हाशिए का समाज (वृद्ध विमर्श के विशेष संदर्भ में)

डॉ. नितीन हिंदुराव कुंभार

हिंदी विभाग, डॉ. पतंगराव कदम महाविद्यालय, रामानंदनगर (बुर्ली) तहसील: पलूस, जिला: सांगली ४१६३०८ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: nkumbhar98@gmail.com

Received: 05 January, 2024 | Accepted: 10 January, 2024 | Published: 11 January, 2024

शोध सार

आज के भौतिक युग में मानवी संबंधों और मूल्यों में संक्रमण की स्थिति पैदा हो गयी है। इसी कारण समाज के हर क्षेत्र में बदलाव आ गया है। २१ वीं सदी में भूमंडलीकरण की खुली बाजार व्यवस्था, परकीय सांस्कृतिक आक्रमण आदि के कारण पूरे विश्व में बाजारवाद और उपभोक्तावाद का जो मायाजाल बुना है उसकी गिरफ्त में हमारा समाज विशेषतः युवा पीढ़ी बुरी तरह फँसती चली जा रही है। समाज दिखावे और उपरी टिम – टिम में अधिक डूब गया है। पूरा समाज जीवन कोरे दिखावे एवं मिथ्या आडम्बरों से ग्रस्त है। आत्मीयता का स्थान भौतिक तथा आत्मसुखवादिता ने लिया है। 'अर्थ' इस आत्मसुखवादिता का केंद्र बन गया है। परिणामतः पारिवारिक संबंधों में नयी – नयी विसंगतियाँ निर्माण हो रही हैं। पारिवारिक विघटन के लिए आज परिवारों में होनेवाली वृद्धों की उपेक्षा भी जिम्मेदार है। बलहीन होते ही परिवारवाले बुजुर्गों के प्रति उदासीन या तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगते हैं। अतः आज घर में बुजुर्गों की उपस्थिति एक बाधा या बोझ लगने लगी है। परिणामतः समाज में वृद्धाश्रम की संख्या बढ़ रही है तो अनेकानेक बुजुर्ग अपनी संतान होने के बावजूद भी दर – दर भटकने के लिए मजबूर हैं। अतः हिंदी उपन्यासों में वृद्धों की बढ़ती समस्या का यथार्थ चित्रण हुआ है।

बीज शब्द :- समाज, भूमंडलीकरण, मूल्य संक्रमण, पारिवारिक विघटन, उपेक्षा, बुजुर्ग

आलेख

साहित्य समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति करता है। अतः मनुष्य के जीवन में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य के माध्यम से ही समाज में व्याप्त प्रवृत्तियों तथा परिस्थितियों का चित्रण किया जाता है। साथ ही समाज में व्याप्त

विसंगतियों और समस्याओं के विमर्श करने की भी परंपरा रही है। हिंदी साहित्य में दलित-विमर्श, किसान विमर्श, नारी विमर्श, आदिवासी-विमर्श, किन्नर-विमर्श के बाद अब वृद्ध-विमर्श की ओर ध्यान आकर्षित हो रहा है। आधुनिक साहित्य में समाज में वृद्धों की बदलती हुई स्थिति तथा वृद्धों की समस्याओं का विवेचन किया गया है। अतः साहित्यकारों ने इस समस्या पर विचार करके वृद्ध विमर्श की तरफ ध्यान आकर्षित किया है। २१ वीं सदी में हिंदी उपन्यासकारों ने वृद्धों की सामाजिक एवं मानसिक संवेदनाओं को विशेष रूप से प्रस्तुत किया है।

२१ वीं सदी में विशेषकर हिंदी उपन्यासकारों में सूरज सिंह नेगी का 'रिश्तों की आँच', 'नियति चक्र', निर्मल वर्मा का 'अंतिम अरण्य', चित्रा मुद्गल का 'गिलिगडू', रवींद्र वर्मा कृत 'पत्थर ऊपर पानी', काशीनाथ सिंह का 'काशी का अस्सी', आदि उपन्यासों में वृद्ध विमर्श का चित्रण विशेष रूप से देखा जा सकता है।

उपन्यासकार सूरज सिंह नेगी एक सजग रचनाकार है, इनके साहित्य में वृद्धों की समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। वर्तमान युग में पारिवारिक विघटन की समस्या बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में बुजुर्गों को अपने परिजनों से सामंजस्य बनाये रखने की मजबूरी होती है। यदि किसी कारणवश वह अपने परिजनों से सामंजस्य बनाने में सफल नहीं होते तो उन्हें वृद्धाश्रम ही एक मात्र रास्ता रह जाता है, वहाँ का वातावरण उनमें परायापन की भावना को बढ़ावा देता है। अतः परिवार में बुजुर्गों के प्रति अपनेपन की भावना को निर्माण करने के लिए उनके बारे में संवेदनशील दृष्टि से विचार करने का प्रयास किया जाए। उनकी भावनाओं की कद्र करना आवश्यक है। सूरज सिंह नेगी ने अपने उपन्यास 'रिश्तों की आँच' में माता - पिता एवं संतान के रिश्तों की बुनियाद को मजबूत बनाते हुए स्पष्ट किया है कि किस प्रकार पिताजी अपना संपूर्ण जीवन अपनी संतान के कल्याण के लिए समर्पित करते हैं। परंतु वृद्धावस्था में वही संतान अपने दायित्व को भूल जाते हैं और माता - पिता की उपेक्षा करते हैं। नई पीढ़ी में हुए बदलाव से आज के बुजुर्ग हतप्रभ हैं। अतः बुजुर्ग समाज एवं पारिवारिक परिवेश में समायोजित कर पाने में असमर्थ पाते हैं। वृद्धावस्था की मजबूरी को अभिव्यक्त करते हुए 'रिश्तों की आँच' उपन्यास में लेखक लिखते हैं, "अक्सर बुढ़ापे में इंसान दूसरों पर निर्भर हो जाया करता है। जो काम हम यौवनावस्था में स्वयं कर लेते हैं, जैसे भी आना हो, जाना हो, क्या खाना, किससे मिलना, इन सब में स्वतंत्र होते हैं। वृद्धावस्था आते ही इन सभी कामों के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं।" इस प्रकार उपन्यास के माध्यम से लेखक ने वर्तमान युग में तीव्र गति से बदलते मूल्य और जीवन शैली के कारण अपने ही परिवार में होनेवाली वृद्धों की उपेक्षा और उनकी मजबूरी का यथार्थ चित्रण किया है।

भूमण्डलीकरण के इस दौर में परिवार में होनेवाला बुजुर्गों का अवमूल्यन तथा टूटते घर-परिवार की व्यवस्थाओं का यथार्थ चित्रण करनेवाले हिंदी कथा साहित्यकारों में निर्मल वर्मा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनके 'अंतिम अरण्य', उपन्यास में इसकी सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। 'अंतिम अरण्य' उपन्यास का प्रतिपाद्य 'मृत्यु' है। उपन्यास का नायक मृत्यु से भयभीत नहीं हुआ है। परंतु नजदीक आती मृत्यु का अहसास नजदीक रहने वाले ही चिंतन करते हुए दिखाई देते हैं। अतः अपनों से ही होनेवाली वृद्धों की उपेक्षा का यहाँ यथार्थ चित्रण हुआ है।

२१ वीं सदी में समाज में तेजी से परिवर्तन हुआ है। भौतिक और तकनीकी सुविधाओं के कारण समाज की महत्वपूर्ण इकाई परिवार और परिवार के सदस्यों पर बदलाव का भारी असर पड़ा हुआ दिखाई देता है। 'नियति चक्र' उपन्यास में पिता का स्नेह अपनी संतान के प्रति इतना प्रगाढ़ होता है कि वह अपना सब कुछ उनके लिए समर्पित कर देते हैं। परंतु बेटा पिता के त्याग और प्रेम को भूल जाता है। अपने अंतिम दिनों में पिता को अपने ही घर से बेघर होना पड़ता

है। नियति चक्र घूमता है और एक दिन बेटा अर्श से फर्श पर आ जाता है। 'नियति चक्र' उपन्यास से पुत्र चित्रांश की पंक्तियों में "मैंने बाबूजी के जीवन काल में उनका तिरस्कार किया, मैं स्वयं उनको अपना प्रतिद्वन्द्वी मान बैठा, मुझे लगा जैसे वह पुरातनवादी विचारधारा के साथ जी रहे हैं। यहाँ तक कि उनके घर से जाने के बाद भी मुझ पर कोई असर नहीं हुआ, लेकिन इस पुण्यात्मा को सम्मान न देने का नुकसान मुझे उठाना पड़ा।"^२ अपने पिताजी की उपेक्षा करनेवाले बेटे की बदलती हुई मानसिकता का चित्रण उपन्यासकार ने किया है। वह आगे कहता है "पिताजी की डायरी जब भी किसी संकट में या असमंजस में होता हूँ मेरा मार्गदर्शन करती है, लगता है जैसे मेरे बाबूजी आज भी मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं। ... सच यही है कि मैं अहंकार के वशीभूत इन नींव के पत्थरों की कद्र न कर सका।"^३ इस प्रकार अपने पिताजी की उपेक्षा करनेवाले बेटे को अपनी भूल का अहसास होता है वह समझ जाता है कि जिस चकाचौंध में वह रह रहा था वह सब पिता के आशीर्वाद की ही देन थी।

भारतीय समाज की संयुक्त परिवार एक केन्द्रीय संस्था और परिवार का प्रमुख स्वरूप रहा है, परंतु आधुनिकीकरण और संचार क्रांति के परिणामस्वरूप आज एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है पारिवारिक संबंधों में दरार बढ़ रही है अर्थात् पुत्र अपने माता-पिता से अलग रहना पसंद करते हैं। चित्रा मुद्गल के 'गिलिगडु' उपन्यास में टूटते हुए संयुक्त परिवार के कारण वृद्धों की बढ़ती समस्याओं का करुणाजनक चित्रण किया गया है। बाबू जसवंत सिंह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बेटे नरेन्द्र के पास दिल्ली चले आते हैं। परिवार में उनके साथ पराये जैसा व्यवहार किया जाता है। बाबू जसवंत सिंह अपनी तुलना टामी से करने लगते हैं- "इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं- एक टामी, दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजिनियर जसवंत सिंह।"^४ इसी प्रकार कर्नल साहब की भी कथा है जो इससे कहीं ज्यादा करुण है। पत्नी की मौत के बाद कर्नल स्वामी अकेले हो गये थे। उनके तीनों बेटे नये - नये शहरों में बस जाते हैं। धन की लालच से खुद का बेटा कर्नल साहब को पीटकर मौत की नींद सुला देता है। कर्नल साहब की पड़ोसन कहती है- "ऐसी कसाई औलादों से आदमी निपूता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं।"^५ चित्रा मुद्गल अपने साहित्य के माध्यम से केवल समस्या को ही चित्रित नहीं करती बल्कि पाठक को सोचने के लिए मजबूर करती हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि २१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में वृद्ध जीवन के यथार्थ का चित्रण हुआ है। आधुनिक युग में पाश्चात्य शिक्षा व सभ्यता के प्रचार एवं प्रसार के परिणामस्वरूप माता-पिता के प्रति संतान का दृष्टिकोण बदल गया है। बाजारवाद, भूमंडलीकरण तथा उदारीकरण के दौर में पारिवारिक रिश्तों में अपनेपन की भावना का अभाव हो गया है, जिस कारण वृद्धों की समस्या दिन – प्रति दिन विकराल रूप धारण कर रही है। अतः आज की युवा पीढ़ी को ज़रूरत है जो पुराने संस्कारों और प्रथाओं से भटक गयी है, उसे सही मार्ग पर लाने के लिए मार्गदर्शन करने की।

संदर्भ सूची

१. नेगी सूरज सिंह (डॉ.), 'रिश्तों की आंच' नवजीवन पब्लिकेशन, नई दिल्ली प्र. सं. 2016, पृ. 101
२. नेगी सूरज सिंह (डॉ.), 'नियति चक्र' सनातन प्रकाशन, कानपुर प्र. सं. 2019 पृ. 122
३. वही,, पृष्ठ 123

४. मुद्गल चित्रा, गिलिगडु, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2010, पृ. 96
५. वही, पृ. 138